DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

लोकदेवत्व

महोबा के मनियाँदेव

महोबा या महोत्सवनगर एक ऐतिहासिक नगर है । इतिहासप्रसिद्ध चंदेल-नरेशों की राजधानी होने की वजह से इसका महत्त्व पूरे देश में प्रतिष्ठित हुआ था, लेकिन लोक उसे आल्हा-ऊदल का महोबा कहकर उसकी पहचान बताता है । यों तो महोबा में चंदेलकालीन मंदिर, दुर्ग, प्रासाद, प्रस्तराभिलेख, मूर्तियाँ आदि पुरातात्त्विक महत्त्व के अनेक अवशेष प्राप्त हुए हैं, पर लोकगाथाओं में सबसे पहले मनियाँदेव की वन्दना होती है । ऐसा प्रतीत होता है कि चंदेलकाल में शिव और चण्डिका के साथ मनियाँदेव लोकदेवता के रूप में विख्यात थे । हिन्दी के आदिकवि जगनिक ने अपने लोकगाथात्मक महाकाव्य में मनियाँदेव को काफी महत्त्व दिया है । प्रश्न उठता है कि ये मनियाँदेव कौन हैं ।

इतिहासकारों में बहुचर्चित मत बी. ए. स्मिथ का है, जिसके अनुसार महोबा के मनियाँदेव को मनियाँदेवी माना गया है और उन्हें चंदेलों की कुलदेवी कहकर चंदेलों को गोंड़ों का आर्यकृत वंशज (हिन्दुआइज्ड गोंड) सिद्ध किया गया है ।-१ छतरपुर जिले में छतरपुर-पन्ना मार्ग पर चन्द्रनगर ग्राम में मनियाँगढ़ नाम का एक दुर्ग है, जो एक ऊँचे पर्वत पर अवस्थित है । पहले वह गोंड़ शासकों का गढ़ था, बाद में चंदेलों के इतिहासप्रसिद्ध आठ दुर्गों में से एक रहा । आर्केल्यॉजिकल सर्वे रिपोर्ट, भाग सात, पृष्ठ ४४ पर पुरातत्त्ववेत्ता जे. डी. बैगलर ने लिखा है कि एक छोटे-से सादा मंदिर के अवशेषों में हाथ में तलवार लिये एक स्त्री की मूर्ति मिली थी । उसने उस मूर्ति को ब्राह्मणों की पार्वती तथा गोंड़ों की अश्लील नग्न स्त्री-प्रतिमा का समन्वित रूप कहा है । साथ ही उसकी मान्यता है कि वह गोंड़ों द्वारा पूजित देवी से अधिक भिन्न नहीं है । इस स्थिति में एक प्रश्न अनायास खड़ा हो जाता है कि उस स्त्री-प्रतिमा का नाम मनियाँदेवी कैसे पड़ा । मेरी समझ में मनियाँगढ़ के एक मंदिर में मिलने से ही उसे मनियाँदेवी नाम से अभिहित किया गया था, वरना बैगलर या कनिंघम के पास कौन-सा ऐसा प्रमाण था, जिससे वे उस मूर्ति को मनियाँदेवी कहते । यदि मनियाँदेवी के कारण इस दुर्ग का नाम मनियाँगढ़ था, तो मनियाँदेवी की प्रसिद्धि पहले से स्थापित होनी चाहिए थी ।

मनियाँगढ़ या मनियाँदेवी नाम की गुत्थी सुलझने का कोई सही रास्ता नहीं दिखाई पड़ता । यह अवश्य है कि महोबा में प्रचलित जनश्रुति के अनुसार मनियाँदेव (महोबा के) चंदेलों के कुलदेव या पूजित देवता थे । १२वीं शती में रचित `आल्हा' गाथा में `मनियाँदेव महोबे क्यार' मिलता है । महोबा के मदन सागर के किनारे एक प्रस्तर दीपस्तंभ के सामने मनियाँदेव का मन्दिर है । इस मंदिर में स्थापित मूर्ति पुरानी है, इस तथ्य से बैगलर महोदय सहमत हैं, लेकिन वे इसे (पुरुष) मनियाँदेव न मानकर (स्त्री) मनियाँ देवी सिद्ध करते हैं । उसे चंदेलों की कुलदेवी तो कहते ही हैं, पर विचित्र है इतिहासकार स्मिथ की यह धारणा कि जब नवीं सदी के प्रारंभ में चंदेलों ने महोबा को अधीन किया,

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९५

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

तब अपने साथ वे मनियाँदेवी की पूजा भी लेते आये ।-२ इसका अर्थ यह है कि मनियाँदेव की मूर्ति मनियाँगढ़ से महोबा लायी गयी थी, जो चन्देलों के लिए कठिन कार्य नहीं था (मनियाँदेव की शिला काफी बड़ी लगती है, जिससे यह तथ्य संदेह के घेरे में आ जाता है) । इसका आशय यह है कि मनियाँगढ़ में मनियाँदेव और मनियाँदेवी दोनों थे । कुलदेव या कुलदेवी को मूलभूमि से लाने की प्रथा बुंदेलखंड में प्रचलित है, इसीलिए इतिहासकारों ने अपनी सिद्धि के लिए उसका सहारा लिया है ।

मूल प्रश्न यह है कि महोबा के मनियाँदेव कौन हैं । पहली बात यह है कि मनियाँदेव (पुरुष) नाम बहुत पहले से लोकमुख में प्रचलित रहा है, अतएव उन्हें मनियाँदेवी (स्त्री) मानना सही नहीं है । दूसरे, `आल्हा' गाथा या `आल्हखंड' (रचनाकाल ११८२ ई. -१२००ई.) में मनियाँदेव ही उल्लिखित हैं, मनियाँदेवी नहीं । तीसरे, आज भी लोक उन्हें मनियाँदेव के नाम से पुकारता है । चौथे, काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित `परमालरासो' (१६वीं शती) में उन्हें देव (पुरुष) ही कहा गया है । दसवें सर्ग के छंद ४००-४०२ में `देव' शब्द का प्रयोग है तथा रानी मल्हन की विनय-`तुम चंदेलन बंस राख आये' में भी क्रिया पुल्लिंग कर्ता की है ।

कविवर द्विज हरिकेश के इतिहास-ग्रंथ `जगतराज की दिग्विजय' (१७२२-२३ ई.) में आये दो छंदों से एक समाधान स्पष्ट हो जाता है-

(१) तिहि समय ऐलविल-३ पार्श्व मणि, दै चंदेल कहि हित सहित ।

मणि देव यक्ष रक्षक सुपुनि, धन कलाप प्रति नित्य नित ।। ५०० ।।

(२). जब ससि चंद्रब्रह्म उपजाये, यज्ञ समय धनपति तहं आये ।

पारस दै मणि देव यक्ष दै, अवनी पर दरसन प्रतक्ष दै ।। ६७३-४ ।।

पहले छंद में पारस मणि के साथ (पार्श्व मणि) यक्ष रक्षक `मणिदेव' का स्पष्ट उल्लेख है । दूसरे छंद में यज्ञ के समय धनपति (कुबेर) का आना तथा पारस और `मणिदेव' यक्ष प्रदान करना उसी की पुष्टि करता है । पारस मणि चंदेलों के पास थी । उसका उल्लेख `आल्हा' गाथा या आल्हखंड में है-"पारस पथरी है महुबे मा, लोहा छुअत सोन हुई जाइ ।" और लोकमुख में आज तक जीवित है । `महोबा खंड' और `परमाल रासो' में भी पारस मणि की चर्चा है । `महोबा खंड' में लिखा है कि पारस मणि की भेंट चन्द्र देवता ने दी थी,-५ परन्तु यह सही नहीं है, क्योंकि पारस मणि के स्वामी यक्ष ही थे । `परमाल रासो' में उसे प्रदान करने का कार्य धनपति या कुबेर करते हैं-"कुब्बेर अति सुख पाय । पारस्स मनि दिय आय ।।"-६

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९५

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

अब पारस मणि के रक्षक मणिदेव यक्ष के संबंध में जिज्ञासा होती है, जिनका उल्लेख `जगतराज की दिग्विजय' में किया गया है । वस्तुतः मणि के स्वामी और रक्षक मणिभद्र या मणिभद्र यक्ष यक्षों के राजा थे । अतएव मणिदेव मणिभद्र ही थे, जो बाद में मनियाँदेव के नाम से प्रसिद्ध हुए । मणि या माणि से बुंदेली में मनियाँ हो जाना सहज है । मणिवाले सर्प को मनियारे कहा जाता है, इसी तरह मणि वाले देव का मनियारे>मनियाँ देव होना भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से सही है और लोकप्रचलन में भी संगत है । चंदेलकाल में यक्ष-पूजा का प्रचलन था । नाटककार वत्सराज ने जो कि अपने को चंदेलनरेश परमर्दिदेव का अमात्य कहता है, `रूपकषटकम्' की रचना की थी । उसके एक नाटक `कर्पूरचरितभाणः' पृ. ३२ में भगवान् मणिभद्र की पूजा का वर्णन है ।-७ स्पष्ट है कि मणिभद्र की पूजा का प्रचलन चंदेलों के समय में भी था ।

बुंदेवखंड में यक्ष-पूजा बहुत प्राचीन है । भरहुत के शुंगकालीन स्तूप में यक्षों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं । पवॉया में नागकालीन यक्ष-मूर्तियाँ अधिक संख्या में प्राप्त हुई हैं । इस प्रामाणिक अधार पर यहाँ यक्ष-पूजा का प्रचलन ईसा से सौ वर्ष पूर्व हुआ था और १५० ई. से ३५० ई. तक उसका उत्कर्ष ऐतिहासिक सिद्ध हुआ । गाँव-गाँव में यक्षों के चबूतरे बन गये । एक कहावत है कि `गाँव-गाँव कौ ठाकुर गाँव-गाँव कौ बीर ।' बीर यक्ष ही थे । पीपल के बरमदेव यक्ष ही हैं । वे लोकदेवता की तरह दीर्घकाल तक मान्य रहे । `ठाकुर' गौंड़ देवता हैं, जो ग्राम की रक्षा करते हैं । दैनों लोकप्रिय रहे, पर उच्च वर्ग में बीर ही स्वीकृत हुए ।-८ असल में, बीर या यक्ष हर प्रकार की सिद्धि के दाता हैं । तुलसीदास ने विनयपत्रिका में लिखा है-

बीर महा अवराधिये साधे सिधि होय ।
सकल काम पूरन करै जानै सब कोय ।।
बैगि, बिलम्ब न कीजिए लीजै उपदेस ।
बीज-मंत्र जपिये सोई जो जपत महेस ।।
प्रेमवारि तर्पन भलो घृत सहज सनेह ।
संसय-समिधि अगिनि-छमा ममता-बलि देह ।।
अघ उचाटि मन बस करै मारै मद मार ।
आकरषै सुख संपदा संतोष बिचार ।
जे यहि भाँति भजन किये मिले रघुपति ताहि ।
तुलसीदास प्रभुपथ चढ्यो जो लेहु निबाहि ।। १०८ ।।

स्पष्ट है कि यक्ष-पूजा इस अंचल में १६वीं शती में भी रही । यक्ष की मूर्तियाँ महाकाय और सुंदर होती थीं, क्योंकि यक्ष शारीरिक सौंदर्य और शक्ति के प्रतीक थे । यक्ष-प्रश्न उन्हें प्रतिभा के धनी सिद्ध करते हैं । धन-सम्पदा के लिए यक्षों की आराधना होती थी । इसीलिए यजि चंदेलों के आदि पुरुष ने अर्थ, बल, प्रतिभा आदि सभी सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए मणिभद्र देव की पूजा की हो, तो

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९५

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है । रामायण और महाभारत में यक्षों के अमरत्व का संकेत है और अमरता हर नहीं है और अमरता हर मानव की लालसा है । चंदेल भी महत्त्वाकांक्षी थे अमरता के । बुंदेलखंड के कलातीर्थ खजुराहो में यक्षों और यक्षणियों की अनेक मूर्तियाँ हैं, जो चंदेलनरेशों तथा मूर्तिकारों के विश्वास की ही नहीं, वरन् चंदेलकालीन लोक के विश्वास की साक्षी हैं ।

यक्षों के प्रतीक रुप में चबूतरे, थूही और मूर्तियाँ स्थापित होते थे । यक्ष का स्थान एक छोटे चौरे के रूप में बनाया जाता है, जिस पर तिकोनी पिण्डी खड़ी कर देते हैं । शिव की पिंडी गोलाकार की होती है, जबकि यक्ष की पिंडी शीर्ष पर नुकीली रहती है । अखाड़े के एक कोने में मिट्टी की नुकीली थूही के रूप में भी यक्ष की पूजा की जाती है । पहलवान उस पर धूल का अर्घ देते हैं । तीसरी है यक्षमूर्ति, जो अपने स्थान पर अकेली रहती है । वह आकार में स्थूल और महाकाय होती है तथा लोककला की शैली में गढ़ी जाती है । दूसरे, उसकी प्रतिष्ठा सरोवर या जल के समीप होती है अथवा किसी प्रसिद्ध अखाड़े के किनारे । महोबा के मनियाँदेव की मूर्ति एक महाकाय तिकोनी शिला में अनगढ़ और भद्दे रूप में उत्कीर्ण है । वह मदनसागर के समीप एक प्रसीद्ध अखाड़े के किनारे स्थापित है । किसी ने श्रद्धा से एक देवल का निर्माण कर मूर्ति को घेर दिया है । इस तरह कई प्रामाणिक साक्ष्य मनियाँदेव को मणिभद्र यक्षदेवता सिद्ध करते हैं । उन्हें आदिवासी देवी या कुलदेवी मानना उचित नहीं है ।

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने अपनी पुस्तक 'भारतीय कला' में यक्ष-सदनों और यक्षायतनों का उल्लेख किया है ।-९ मेरी समझ में मनियाँगढ़ भी मणिभद्र यक्ष का मदन या चैत्य था, इसीलिए उसका नाम मनियाँगढ़ पड़ा था । जहाँ तक बैगलर महोदय को प्राप्त मनियाँदेवी की पहचान का प्रश्न है, वह लोक शिल्पकार द्वारा गढ़ी हुई प्रतिमा है, जो मनियाँगढ़ में प्राप्त होने के कारण मनियाँदेवी नाम से अभिहित की गयी । इस जनपद में नग्न प्रतिमाओं का अंकन यक्षिणियों के रूप में हुआ है, -१० पर खड्ग-धारण किये किसी मूर्ति का पता नहीं है । यहाँ सती-प्रतिमाओं की भी बहुलता है । हाथ में तलवार लिये प्रतिमा युद्ध में रणखेत होने का बोध कराती है अथवा वह सैनिक वर्ग और क्षत्रिय जाति का संकेत देती है ।-११ यदि देवी प्रतिमा है, तो शिल्पकार उसमें वस्त्र उत्कीर्ण करना भूल गया है ।-१२ लोकशिल्पकार मूर्ति की सज्जा और अलंकरण की चिंता नहीं करता ।

इतिहासकारों के सामने सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह था कि चंदेल कौन थे । 'महोबा समय' में वर्णित हेमवती की कथा से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि वे ब्राह्मण कन्या से उत्पन्न चन्द्रमा की संतान अर्थात् चन्द्रवंशीय थे । डॉ. हेमचन्द्र राय ने इस कथा और चंदेलकालीन अभिलेखों में संबंध स्थापित कर उन्हें क्षत्रिय जाति का माना है ।-१३ चिंतामणि विनायक वैद्य ने गोत्र नाम से उन्हें उच्च कुल का आर्य कहा है ।-१४ लेकिन इतिहासकारों में बहुचर्चित मत वीं ए. स्मिथ का है, जिसके अनुसार चंदेलों की उत्पत्ति आदिवासी गौंड़ या भर से हुई है । वस्तुतः स्मिथ गोंड़ों को ही चंदेलों से संबद्ध करते हैं । उसका मूल कारण है महोबे के मनियाँदेव को मनियाँ देवी मानना और मनियाँदेवी की गौंड़ों की देवी से समरूपता स्थापित करना । स्मिथ का चंदेलों को हिन्दुआइज़्ड गोंड सिद्ध करना अथवा भरों की संतति बतलाना तथ्यहीन है । वस्तुतः गोंड़ों और भरों ने यक्ष-पूजा को मान्यता दे दी

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९५

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

थी ।-१५ इस वजह से चंदेलों के संबंध उनसे स्थापित होने में कोई कठिनाई नहीं हुई । चंदेलों को प्रतिहारों का विरोध करने के लिए यहाँ के आदिवासियों से सहायता लेना आवश्यक था । आशय यह है कि महोबा के मनियाँदेव मणिभद्र यक्षदेवता ही थे और इस तथ्य से चंदेलों की उत्पत्ति तथा राजनीति का कुहरा साफ हो जाता है ।

संदर्भ-संकेत

१. इण्डियन ऐण्टिक्वेरी, १९०८, भाग ३७, पृ. १३६-१३७

२. चंदेल और उनका राजत्वकाल, केशवचन्द्र मिश्र, पृ. ३९ (का.ना. प्र. सभा) में उद्धृत ।

३. कुबेर ने पार्श्व (पारस) मणि दी थी ।

४. जगतराज की दिग्विजय, हस्तलिखित, छंद ५०० एवं ६७३

५. चुम्मि वदन विधु पुत्र कर नरवाहन बुलवाय । पारस मनि सो ल्याइव चन्द्रब्रह्म थप जाय ।। १४० ।।

६. परमाल रासो, डॉ. श्यामसुंदर दास, २/७४

७. भअवं माणिभद्द, णमो दे । सअलोवि एस तुह पहावो जं मे सामी हारदत्तो जूअम्मि जअलच्छीवल्लहो । ता गेन्ह एदं पूओपहारम् । (पूओपहारम्=पूजोपहारम्)

८. विस्तृत विवरण के लिए मेरा लेख-`लोकदर्शन और बुंदेलखंड' चौमासा, अंक १७ तथा `लोकधर्म और बुंदेलखंड' चौमासा, अंक १६

७. भारतीय कला, १९६६, पृ. १५३

१०. जैन मन्दिर का वाह्य भाग, खजुराहो ।

११. चन्देलकालीन बुंदेलखंड का इतिहास, डॉ. अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, १९६८ पृ. १३ पर पादटिप्पणी में जे. ए. एस. बी. १८७७, पृ. २३४-२३५ एवं जे. ए. एस. बी. १८६८. पृष्ठ १८६., से कुछ पंक्तियाँ उद्धृत-"इस कथा की प्रसिद्धि कुछ पाषाण स्तंभों से भी प्रकट होती है । इनमें परस्पर हाथ पकड़े हुए स्त्री-पुरुष के दो चित्र अंकित हैं । दाहिनी ओर चन्द्र तथा सूर्य के चित्र हैं । किन्तु सूर्य और चन्द्र साथ-साथ उदय नहीं होते । सूर्य-चन्द्र का एक साथ अंकन संभवतः हेमवती कथा की ओर निर्देश करता है, क्योंकि उस कथा में यह उल्लेख है िक ग्रीष्म ऋतु में जब सूर्य की किरणें प्रखरतम हो रही थीं, भगवान् चन्द्र हेमवती के सम्मुख आये ।" महोबा खंड में चंदेलों की उत्पत्ति की कथा-अनुसार चन्द्र और हेमवती के संसर्ग से चंदेलों के आदिपुरुष का जन्म हुआ था, उसी को प्रमाणित करने के लिए उक्त प्रस्तर स्तम्भ में उत्कीर्ण दृश्य का सहारा लिया गया है । लेकिन वह सती स्तम्भ है और उसके सूर्य-चन्द्र लोकमूर्ति के प्रतीक हैं । अनेक सती मूर्तियाँ तलवार लिये हुए चित्रित की गयी हैं । लेखक उसे ठीक से नहीं समझ सका ।

१२. देखिए मेरा लेख-"लोककला : पहचान और कसौटी", चौमासा, अंक ९

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९५

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/

१३. डायनेस्टिक हिस्ट्री आफ नार्थ इण्डिया, भाग २, पृ. ६६७-६६८

१४. हिस्ट्री ऑफ मेडीवल हिन्दू इंडिया, भाग २, पृ. १३०-१३३

१५. \`ठाकुर' गोंड़ों के देव हैं । \`ठाकुर' चौरों की जगहों पर \`बीरों' (यक्षों) के चौरे बनने से स्वयंसिद्ध है कि गोंड़ों और अन्य आदिवासियों ने यक्ष-पूजा को स्वीकार कर लिया था ।

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पहला संस्करणः १९९५

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

DOWNLOADED FROM : http://bundelkhand.in/